अमृत वाणी

प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ हैं, परंतु उससे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। -हरिऔध,

ट्रंप-किम की ऐतिहासिक मुलाकात

सिंगापुर में मंगलवार को अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग के मध्य बहुप्रतीक्षित मुलाकात अंततः सौहाद्रपूर्ण माहौल में संपन्न हो गई और उसके साथ ही मुलाकात को लेकर चल रही तमामा अटकलों और संशयों पर विराम लग गया। कुछ समय पहले तक भी ऐसा लग रहा था कि ये मुलाकात शायद ही संभव हो जबकि मुलाकात के स्थान से लेकर तिथि तक तय हो चुकी थी मगर कहते हैं न कि क्व्व्हो भला जब अंत भलाक्व्क इस मामले में भी वहीं हुआ। दुनिया की दो बड़ी शक्तियों के बीच न केवल मुलाकात हुई बल्कि इसे अप्रत्याशित रूप से सफल मुलाकात कहा जा सकता है। दोनों नेता जिस तरह से एक दूसरे से मिले तथा बातचीत की उससे यही लगा कि वे विश्व शांति की सोच के साथ आए थे। राष्ट्रपति ट्रंप ने एक अहम बात कही भी है कि जंग कोई भी छेड़ सकता है मगर शांति की पहल बुद्धिमान ही करता है। दोनों नेताओं के बीच वार्ता पूरी तरह से सकारात्मक रही, उसका प्रमाण यह है कि वार्ता के बाद किम जोंग ने परमाणु परीक्षण नहीं करने यहां तक कि आज से ही अपने देश में मिसाइल परीक्षण स्थलों को नष्ट करने की घोषणा की। दोनों देशों के इस सफल वार्ता के साथ ही दुनिया के ऊपर से विश्व युद्ध का खतरा टल गया।

वार्ता खत्म होते तक दुनिया भर की नजरें इन दोनों नेताओं पर टिकी थी। कुछ समय पहले तक एक दूसरे के कट्टर दुश्मन रहे दोनों देशों की मुलाकात इतनी सौहार्द्रपूर्ण और सफल होगी ऐसी आशा किसी ने नहीं की थी लेकिन यह मुलाकात ऐतिहासिक बन गई। स्वयं अमरीका ने बैठक की सफलता पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि दोनों नेताओं की वार्ता उम्मीद से ज्यादा सफल रही।

ट्रंप और किम के मुलाकात की यह सफलता केवल अमरीका और उत्तर कोरिया के मध्य वर्षो की दुश्मनी के अंत का संदेश वाहक नहीं है बल्कि दुनिया के उन तमाम देशों जिनके मध्य वर्षों से नफरत और दुश्मनी कायम है के लिए भी एक अत्यंत सकारात्मक संदेश का सूचक है कि अगर दोनों पक्ष पहल करें तो कितनी भी बड़ी और पुरानी दुश्मनी को खत्म करना मुश्किल नहीं है बस यही सोच होनी चाहिए कि शांति सबके लिए सुखद और स्वागतेय है।

राजकाज

प्रणब दा पुनः राजनीति में

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने संघ के कार्यक्रम में हिस्सा क्या लिया राजनीतिक दावों और कयासों के दौर शुरु हो गए। शिवसेना प्रवक्ता संजय राउत ने तो यहां तक कह दिया कि श्हमें लगता है कि संघ खुद को उस स्थिति के लिए तैयार कर रहा है कि यदि भाजपा 2019 आम चुनाव में बहुमत प्राप्त करने में विफल हो तो वह प्रणब मुखर्जी का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए पेश कर सके।श् बकौल राउत इस बार हर हाल में भाजपा कम से कम 110 सीटें हारेगी। वहीं प्रणब दा की बेटी और कांग्रेस नेत्री शर्मिष्ठा मुखर्जी ने राउत को दो.टूक जवाब देते हुए कहा है कि श्भारत के राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत होने के बाद मेरे पिता दोबारा सक्रिय राजनीति में नहीं आने वाले हैं।श् बहरहाल कोई कुछ भी क्यों न कहे लेकिन यह तो सच है कि जब से प्रणब दा संघ कार्यक्रम के बाद से सुर्खियों में तो आ ही गए हैं।

राहुल का चुनावी बिगुल

दिल्ली में ओबीसी सम्मेलन बुलाकर लोकसभा चुनाव 2019 का बिगुल जो फूंका गयाए उससे एक बात तो तय हो गई कि राहुल गांधी पर सभी की नजरें हैं और उन्हें अपने ही नहीं बल्कि धुर विरोधी भी वॉच करने में लगे हुए हैं। यही वजह है कि यहां जैसे ही राहुल ने कोका.कोला को लेकर बयान दिया चारों ओर से आवाजें आ गईं कि राहुल ने यह क्यों और क्या कह दियाए जो कि सत्यता से परे है। इसके उलट भाजपा नेता और खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं जो कि अनेक तरह से गोल.माल बातें करते पकड़े जाते हैंए लेकिन उन पर सवाल नहीं उठाए जाते और यह कह दिया जाता है कि चुनावी जुमले हैं उन पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। इस मामले में जानकारों की मानें तो राहुल को देश की आमजनता अब प्रधानमंत्री बनते देखना चाहती हैए इसलिए उनसे किसी भी तरह के झूठ की उम्मीद उन्हें नहीं है। आगे राहुल को इस बात का खास ध्यान रखना होगाए क्योंकि उन पर तो देश की नजर है।

रक्तदान कर बचा सकते हैं कई जिंदगियां

भारत में कुल रक्तदान का केवल 59 फीसदी रक्तदान स्वेच्छिक होता है। तीन महीनों की समय अवधि के बाद रक्तदान कर सकते हैं। रक्तदान करने की अधिकतम आयु सीमा 65 वर्ष है। हालांकि, साठ वर्ष से ज्यादा आयु के लोगों द्वारा चिकित्सक के मार्गदर्शन में पहली बार अथवा नियमित रूप से रक्तदान किया जा सकता है। रक्त की मात्रा 350 मिलीलीटर से 450 मिलीलीटर के अंतर पर लिया जा सकता है। रक्त की मात्रा को प्रतिस्थापित करने में सामान्य रूप से 24 घंटे लगते हैं। यदि आप सामान्य रूप से स्वस्थ हैं, तो चिंता की कोई कोई बात नहीं है। यदि प्रयोगशाला मोबाइल वैन उचित निवारक कार्रवाई कर रही है, तो संक्रमण की संभावना कम होती हैं रक्तदान की प्रक्रिया पूरी तरह से सुरक्षित है। प्रत्येक रक्तदाता के लिए नई सुई का उपयोग किया जाना चाहिए तथा उस सुई को उपयोग के बाद फेंक दिया जाना चाहिए।

रक्तदान सामान्यत चार चरणों में संपन्न होने वाली प्रक्रिया है। पंजीकरण, रक्त दानकर्ता की चिकित्सीय पृष्ठभूमि, रक्तदान और अल्पाहार या जलपान। स्वस्थ इंसान के शरीर में 5 से 7 लीटर रक्त हमेशा मौजूद रहता है। शरीर में एक यूनिट रक्त अतिरिक्त होता है जो दिया जा सकता है। हमारे शरीर में रक्त बनने की क्रिया भी काफी रोचक है। रक्त, श्वेत रक्त कण, लाल रक्त कण, प्लाज्मा और प्लेटलेट्स से मिलकर बने रक्त में लाल रक्तकण शरीर के हर भाग में ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करते हैं, श्वेत रक्त कण रोग प्रतिरोधक होते हैं तो प्लेटलेट्स का काम होता है बहते रक्त को रोकना। कभी चोट लगने पर खून बहता है और प्लेटलेट्स ही उसे बहने से रोकने का काम करते हैं। हर दिन हमारे शरीर के बोन मैरो (अस्थिमज्जा) में रक्त कोशिकाओं का निर्माण होता रहता है। रक्तदान कर अपने रक्त की मुफ्त जांच का लाभ भी मिल जाता है। रक्त जीवन का आधार है और इसके निर्माण की प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है। यदि इसका उपयोग दूसरे के लिए कर दिया जाय तो एक जीवन को बचा लिया जाता है ।

रक्तदान जीवनदान है। रक्तदान को महादान कहा गया है क्योंकि रक्त का कोई विकल्प नहीं है। रक्तदान कई जिंदगियों को बचाता है। इससे उन लोगों को जीने की उम्मीद मिलती है, जो उम्मीद खो चुके होते हैं। रक्तदान का कार्य समाज की एक बड़ी सेवा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा हर साल 14 जून को रक्तदान दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य था लोग रक्तदान के महत्व को समझें और अधिक से अधिक लोगों के जीवन को रक्तदान से आलोकित करें। रक्तदान एक ऐसा दान है जो न सिर्फआपको जरूरतमंद की दुआएं दिलाता है बल्कि आपके शरीर के लिए भी फायदेमंद होता है। आपके खून की चंद बूंदों से किसी घर का चिराग बुझने से बच सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के तहत भारत में सालाना एक करोड़ यूनिट रक्त की जरूरत है लेकिन उपलब्ध 75 लाख यूनिट ही हो पाता है। यानी करीब 25 लाख यूनिट रक्त के अभाव में हर साल सैंकड़ों मरीज दम तोड़ देते हैं।

रक्त से आपका जीवन चलता है पर इसके दान से कितने ही जीवन बचाए जा सकते हैं। रक्तदान को लेकर आज भी लोग भ्रम के शिकार हैं। कुछ लोग आज भी मानते हैं कि रक्तदान से शरीर में कमजोरी आती है। इसी भ्रान्ति का नतीजा है कि लोग अपने मां, बाप, भाई और बहन तक के लिए रक्त देने से आना कानी हैं। वे ब्लड बैंकों के चक्कर काटते हैं और पैसे से रक्त की व्यवस्था करना चाहते हैं। वे भूल जाते हैं कि ब्लड बैंकों में भी रक्त तभी उपलब्ध हो पाता है जब लोग स्वेच्छा से रक्तदान करें। आमतौर पर ब्लड बैंक जरूरतमंदों को उनकी जरूरत वाले रक्त समूह का रक्त बदले में ही दे पाते हैं। रक्त मानव शरीर का एक प्रकार का तरल पदार्थ है ,जो शरीर का कोशिकाओ को अवाश्यक पोषक तत्व और प्राणवायु पहुचाने का कार्य करता है और कोशिकाओ से खराब खराब पदार्थ को निकालने का कार्य करता है । रक्त की कमी के कारण देश भर में हर वर्ष हजारों लोगो की मृत्यु हो जाती है। हर दो सेकंड में किसी ना किसी को रक्त की जरूरत होती। एक नियमित रक्तदाता, तीन महीने बाद ही अगला रक्तदान कर सकता है। उन्हें आयरन, विटामिन बी व सी युक्त आहार करना चाहिए। इसके लिए उन्हें नियमित आहार में पालक, संतरे का जूस, फलियां व डेरी उत्पाद आहार में लेने चाहिए। रक्तदान से दो-तीन घंटे पहले पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं व भरपेट भोजन करें। इससे खून में शुगर की मात्रा स्थिर रहती है।

यह हम सबकी जिम्मेदारी और कर्तव्य है कि अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करें। रक्तदान के यज्ञ में अपनी आहुति देकर लाखों लोगों का जीवन बचाएं , क्योंकि रक्तदान तो जीवन दान है। इससे बड़ा पुण्य का कोई काम नहीं है। हमारे देश में अनादि काल से मानव जीवन बचाने का कार्य चल रहा है। भारतवासी यह मानते है की किसी का जीवन बचाने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। अपने पूर्वजों द्वारा बताएं मार्ग पर चलकर जीवन बचाने के इस महा यज्ञ में अपनी भागीदारी देनी चाहिए।

बाल मुकुन्द ओझा
(ये लेखक के अपने विचार है)

स्व-प्रेरणा की मिसालों से बनता समाज

कहते हैं कि जिसके सिर पर कुछ कर गुजरने का जुनून सवार होता है तो फिर वो हर मुश्किल हालात का सामना करते हुए अपनी मंजिल को हासिल कर ही लेता है। ऐसे लोग अपने किसी भी काम के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं होते बल्कि वो आत्मनिर्भर होकर अपने सभी कामों को अंजाम देते हैं और दुनिया के सामने एक अनोखी मिसाल पेश करते हैं। जुनून, स्वप्रेरणा, श्रमदान और आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश करनेवाला एक ऐसा ही अनूठा उदाहरण छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से मात्र पच्चीस किलोमीटर दूर आमदी नाम के एक गांव में लोगों द्वारा खुद तालाब बना लेने का है। यह गांव हर साल गर्मी में पानी के लिए तरस जाता था। लेकिन विकास के बड़े-बड़े दावे करने वाली राज्य सरकार ने कोई सुध नहीं ली। भले ही ऐसे संकल्प मामूली हो, लेकिन इतना तय है कि गंभीरता से इन्हें निभाने पर ये कोई न कोई उपहार जरूर देते हैं, एक मिसाल कायम करते हैं। चाहे तालाब बनाने, सड़कें बना लेने, कुएं खोदने, पुल बना देने, स्कूल चलाने जैसे तमाम काम हैं जो लोगों ने अपनी ओर से पहल करते हुए पूरे किए हैं।

आमदी तो राजधानी के एकदम करीब गांव है, जब वहां के लोगों की जरूरतों पर सरकार आंखें मूंदे हैं तो इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि दूरदराज के गांवों में जन-सुविधाओं का क्या हाल होगा। आमदी गांव के लोग लंबे समय से सरकार से तालाब बानाने की मांग कर रहे थे। लेकिन जब किसी ने नहीं सुनी तो लोगों ने खुद ही इस काम को अंजाम देने का संकल्प किया और जुट गए। मई, 2016 से चार एकड़ इलाके में तालाब बनाने का काम शुरू हुआ था। गांव के सारे लोगों ने श्रमदान किया। ऐसी ही और भी मिसालें हैं। आबिद सुरती ने भी पानी बचाने की दृष्टि से एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे फादर ऑप इंडियन कॉमिक्स कहलाते हैं। वे चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं- सेव एवरी ड्रॉप और ड्रॉपडेड, हर बूंद बचाओ या मारे जाओ। आजकल प्लम्बर साथ में लेकर घूमते हुए वे लोगों के नल ठीक करने में जुटे हैं। मुम्बई के इस फरिश्ता ने नलों से टपकने वाली बूंदों को बचाकर जल संरक्षण का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। आप कुछ करना चाहते हैं तो हजार रास्ते हैं या यूं कहिए रास्ते अपने आप बनते जाते हैं। उत्तरप्रदेश के सोनभद्र जिले के एक गांव में आदिवासियों ने चट्टाने काट कर साढ़े छह किलोमीटर लंबी सड़क बना डाली थी। आजादी के पैंसठ साल बाद इस गांव में प्राथमिक विद्यालय तो खुल गया था, लेकिन आने-जाने के लिए रास्ता नहीं था। छात्रों और शिक्षकों की समस्या को देखते हुए ही गांव वालों ने खुद ही सड़क बनाने का बीड़ा उठाया और दो साल से भी कम समय में रास्ता बन गया। महाराजगंज जिले में डेढ़ हजार से ज्यादा आबादी वाले एक गांव में ग्राम प्रधान ने बिना सरकारी मदद के हर घर में शौचालय बनवा दिए। अमूमन जेल किसी भी बंदी के लिए यातना गृह से कम नहीं होती, लेकिन हरिद्वार में एक कारागार ऐसा भी है जो बंदियों के लिए किसी तपस्थली से कम नहीं। यहां चलाए जा रहे कार्यक्रम निश्चित रूप से बंदी सुधार व पुनर्वास में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। साक्षरता कार्यक्रम का ही नतीजा है कि आज यहां निरक्षर बंदी भी हस्ताक्षर करने में सक्षम हो गए हैं। भगवा वस्त्र पहने कुदाल-फावड़े की मदद से नदी में से गाद निकालते हुए 45 वर्षीय संत बाबा बलबीर सिंह सीचेवाल को देखकर अनायास ही मन में भागीरथ नामक उस महामुनि की याद कौंध जाती है जो अपनी साधना के बल पर स्वर्गलोक से गंगा उतार लाए थे। इन संत महापुरुष ने गुरू नानक देवजी के जीवन से जुड़ी गंगा के समान पवित्र नदी काली बेई को एक प्रकार से पुनर्जन्म दिया है। 160 किलोमीटर के प्रवाह मार्ग में गांवों व नगरों के गंदे पानी, आसपास के खेतों में कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग, कीचड़ और जंगली घासफूस के कारण गंदा नाला बन चुकी यह नदी आज एक कमंडलधारी कर्मयोगी संत के संकल्प से सुजलाम्-सुफलाम्, रमणीय सरिता बन चुकी है। हेलन किलर की 'द स्टोरी ऑफ माय लाइफ' चर्चित किताब का नाम तो आपने सुना होगा। किलर अमेरिकी लेखिका, राजनीतिक कार्यकर्ता और कला स्नातक की उपाधि अर्जित करने वाली पहली बधिर और दृष्टिहीन महिला थीं। उनकी तरह के हौसले और जज्बे से मेल खाती है रूद्रारम के धर्मेंद्र की जीवनी, जो दृष्टिहीन होने के बावजूद बिना सरकारी सहायता के अपना रोजगार स्थापित करने में सफल रहे। साल 2009 बैच के आईएएस ऑफिसर आर्मस्ट्रॅान्ग पेम एक ऐसे शख्स हैं जो ना सिर्फ अपनी कर्मठता के लिए जाने जाते हैं बल्कि देखते ही देखते उनके जुनून ने उन्हें चमत्कारी पुरुष भी बना दिया। पेम आईएएस बने और मणिपुर के टूसेम जिले में एसडीएम के पद पर उन्हें नियुक्त किया गया। इस जगह पर लोगों को ट्रांसपोर्ट की सुविधाएं नहीं मिलती थीं। इसलिए आर्मस्ट्रॅान्ग ने इस समस्या को दूर करने के बारे में सोचा और उन्होंने ठान लिया कि चाहे सरकार की मदद मिले या नहीं वो सड़क बनावकर ही रहेंगे। अपने संकल्प के बल पर उन्होंने 100 किलोमीटर लंबी सड़क बनाने का सराहनीय काम किया है।

गलत मूल्य शीघ्र हावी हो जाते हैं। अच्छे मूल्यों की स्थापना के लिए उन्हें जीना पड़ता है। वे बातों से स्थापित नहीं होते। ऐसा हर युग में होता रहा है, पर हर युग में कोई 'सुपरमैन' भी पैदा होता रहता है। सुपरमैन अब केवल चलचित्रों व कार्टूनों की पुस्तकों में ही रह गये हैं, असली जीवन में नहीं, ऐसी बात नहीं है। आज भी ऐसे रोशनी के टूकडे यत्र-तत्र बिखरे हैं। जरूरत के साथ अगर मन में जज्बा हो और सामूहिक प्रयास हो तो बिना सरकार के मदद के भी लोग रास्ते निकाल लेते हैं। सुविधाओं से वंचित ऐसे लोग उन लोगों के लिए मिसाल हैं जो सरकारी मदद की बाट जोहते रह जाते हैं। लोगों के ऐसे सफल प्रयास सरकारों के नाकारेपन, भ्रष्टाचार, लापारवाही और जनता के प्रति उपेक्षा की ओर भी इशारा करते हैं। लेकिन जागरूकता और जनभागीदारी के ऐसे छोटे-छोटे सामूहिक प्रयास बड़े-बड़े काम कर डालते हैं, जो सरकारों की जिम्मेदारी है। श्रमदान और स्व-प्रेरणा की ऐसी मिसालों ने यह तो साबित किया है कि जहां चाह वहां राह। सीतापुर जिले में सोन नदी पर पुल नहीं था। गांव वालों ने खुद ही अस्थायी पुल बना डाला। ऐसे में सरकार और प्रशासन की भूमिका सवालों के घेरे में आती है। आजकल राजनीति एवं सत्ता के इर्द-गिर्द एक प्रवृत्ति चल पड़ी है, मुद्दों की। कौन-सा मुद्दा जनहित का है, उन्हें कोई मतलब नहीं। कौन-सा स्वहित का है, उससे मतलब है। और दूसरी हवा जो चल पड़ी है, लॉबी बनाने की, ग्रुप बनाने की। इसमें न संविधान आड़े आता है, न सिद्धांत क्योंकि ÷सम विचार÷ इतना खुला शब्द है कि उसके भीतर सब कुछ छिप जाता है। छोटी से छोटी संस्था व व्यवस्था में लॉबी का रोग लग गया है। जो शक्ति संस्था व समाज के हित में लगनी चाहिए, वह गलत दिशा में लग जाती है। सिद्धांत और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की कोशिश करते हैं। सत्य को ढका जाता है या नंगा किया जाता है पर स्वीकारा नहीं जाता। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। समाज को विनम्र करने का हथियार मुद्दे या लॉबी नहीं, पद या शोभा नहीं, ईमानदारी है, जिजीविषा है, संकल्प है। और यह सब प्राप्त करने के लिए इनके साथ सौदा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि राष्ट्र, सरकार, समाज, संस्था व संविधान ईमानदारी, जिजीविषा एवं संकल्प से चलते हैं, न कि झूठे दिखावे, आश्वासन एवं वायदों से। दायित्व और उसकी ईमानदारी से निर्वाह करने की अनभिज्ञता संसार में जितनी क्रूर है, उतनी क्रूर मृत्यु भी नहीं होती।

हमारे कर्णधार पद की श्रेष्ठता और दायित्व की ईमानदारी को व्यक्तिगत अहम् से ऊपर समझने की प्रवृत्ति को विकसित कर मर्यादित व्यवहार करना सीखें। बहुत से लोग काफी समय तक दवा के स्थान पर बीमारी ढोना पसन्द करते हैं पर क्या वे जीते जी नष्ट नहीं हो जाते? खीर को ठण्डा करके खाने की बात समझ में आती है पर बासी होने तक ठण्डी करने का क्या अर्थ रह जाता है? हमें लोगों के विश्वास का उपभोक्ता नहीं अपितु संरक्षक बनना चाहिए।

ललित गर्ग
(ये लेखक के अपने विचार है)

असली क्या है नकली क्या है, क्यों पूछें

महान गीतकार शैलेन्द्र ने एक गीत लिखा था. श्कल की दौलत आज की खुशियाँ, उनकी महफिल अपनी गलियाँ असली क्या है नकली क्या है पूछो दिल से मेरे।श्हमारे दौर के इस गीत पर पहले तो कई दिनों तक विचार करता रहा कि इन सब बातों का असली.नकली होने से क्या वास्ता! कल की दौलत तो असली ही रही होगी और फिर आज की खुशियाँ क्या नकली हो गई हैं! और फिर महफिलें!ये दिखाई तो असली ही देती हैं लेकिन जो दिखाई देता है वह होता नहीं है और जो होता है वह दिखाई नहीं देता।

वैसे भी असली.नकली में भेद करना भी थोड़ा मुश्किल ही है क्योंकि कभी.कभी गुणसूत्र भी समान होते हैंएरंग.रूप भी मिल जाते हैं तब अन्तर कैसे करें!असली.नकली का चक्कर भी ऐसा है कि हर असल चीज की नकल तैयार करने के लिए लोग एक पैर पर खड़े मिलेंगें!

इधर देखिए कि नकली पुलिस के कारनामों से असली पुलिस भी परेशान हो गई है।अभी तक तो फिल्मों में ही देखते आए हैं कि असली पुलिस के पहुँचने के पहले ही नकली पुलिस अपना कारनामा दिखा जाती है। कई फिल्मों में नायक स्वयं ही नकली पुलिस का भेस धरकर कमाल बता जाता है। असली पुलिस का ढ़ीलापन नकली पुलिस के कमाल का जरिया है लेकिन यह तो फिल्मों में कल्पना आधारित बात हो सकती है क्योंकि फिल्मी मायाजाल कपोल.कल्पित है तथापि असल जिन्दगी में जब नकल चलने लग जाए तब! किन्तु यह तो हो ही रहा है!नकली पुलिस वसूली कर रही हैएठग रही है लेकिन वह ऐसा कैसे कर सकती हैय्वसूली करने और ठगने का हक तो बस असल पुलिस का ही हैएउसके एकाधिकार पर अतिक्रमण!नकली पुलिस वसूली करेगी तो वह अवैध वसूली ही कही जाएगी।असल पुलिस जो वसूली करेगी वह उसके अधिकार की बात है क्योंकि यह पद के साथ ही सुलभ है। असल पुलिस की शक्तियों पर आघात तो नहीं होना चाहिए और शायद इसीलिए गंभीर विचार.विमर्श के बाद एक अच्छा तरीका खोज निकाला है।अब उसने अपनी पहचान बताने वाले आई कार्ड को डिजिटल कर दिया हैए नये कार्ड होलोग्राम और बारकोड वाले रहेंगेएजिसकी फोटोकॉपी भी नहीं हो सकेगी।चलियेएयह खुशफहमी भी पाल कर रखी जाए तो क्या बुरा है!नकली नोटएनकली पासपोर्ट के दौर में नकली आई कार्ड! जब नकली पुलिस असली पुलिस का रूप धारण कर लेती है तब यह बारकोड और होलोग्राम!कोई बात नहींए यदि यहाँ भी कुछ गड़बड़ मिली तो और कोई उपाय। आम आदमी से असली आई कार्ड और असली पुलिस की पहचान की अपेक्षा तो की जा सकती है।

वैसे भी जब ट्रैफिक बिगड़ने लगता है, दुर्घटनाएँ रूकने का नाम नहीं लेती और चालान और वसूली के बावजूद ट्रैफिक सुधारे नहीं सुधरता तो चौराहे की रोटरी कभी बड़ी तो कभी छोटी करना लाजमी हो जाता है। अभियन्ताओं और वास्तुविदों या ट्रैफिक विशेषज्ञों की डिग्री पर सवाल नहीं किया जा सकता और न ही यह देखा जा सकता है कि डिग्री असल है या नकल! तब यह असली पुलिस और नकली पुलिस की पहचान कैसे! क्या कोई हिम्मत कर सकता है वर्दीधारियों से उनका आई कार्ड मांगने और दिखाने की! चाहे वह असली हो या फिर नकलीएपरन्तु होगा तो पुलिसवाला ही। जनता से की जाने वाली वसूली उनके अधिकार एउनकी शक्तियों के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है।ऐसे में कौन कह सकता है कि यह अवैध है! वैध-अवैध का मामला तो असली और नकली पुलिस का आपसी मामला हो सकता है।हम क्यों फटे में अपना पैर फसायें!

डॉ.प्रदीप उपाध्याय
(ये लेखक के अपने विचार है)